(1600/RCP/RPS)

If you go through the survey and remove the percentage of triple talaq, it is hardly one per cent in India. The Government is passing the Bill and is assuming that they are only favouring women, but the man of the house goes to jail and he has to face punishment. There will be more hatred among the married couples. After he goes to jail, who will take the responsibility of his wife, his kids and the rest of his family? Who will feed them? If fact, they will suffer more after he goes to jail.

Nowadays, the Muslim community is facing mob lynching in the country. So, we oppose the provision of punishment in this law.

Thank you very much, Sir.

(ends)

**माननीय अध्यक्ष:** माननीय सदस्यगण, मैं आपको स्थिति से अवगत करा दूं कि सभी माननीय सदस्य अपनी बात संक्षेप में कहें। मैं सिर्फ आपको नहीं कह रहा हूं, मैं सभी माननीय सदस्यों को कह रहा हूं। बीएसी में भी सभी माननीय सदस्यों का यह मत था कि जितना समय आबंटित होता है, उससे ज्यादा समय सभी को सदन में मिल रहा है। इसलिए हर बिल पर बोलने के बारे में सभी लोगों ने बीएसी में बैठकर यह तय किया है। इसलिए सभी लोग संक्षेप में अपनी बात कहें।

श्री असादुद्दीन ओवैसी।

1601 बजे

**श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद):** शुक्रिया, मोहतरम स्पीकर साहब।

मैं इस बिल की मुख़ालफ़त में खड़ा हुआ हूं। यह मेरी कंसिस्टेंट एप्रोच है। तीसरी मर्तबा मैं इसकी मुख़ालफ़त में खड़ा हुआ हूं और इंशाल्लाह, जब तक जिन्दगी बाकी रहेगी, इस बिल की मुख़ालफ़त करता रहूंगा।

मोहतरम स्पीकर साहब, यह बिल हिन्दुस्तान की आईन की दफा 14, 15, 21, 26 और 29 की खिलाफवरजी करता है। यह हमारे आईन के बुनियादी हक़ूक़ की मुख़ालफ़त करता है। अब आप देखिए कि ट्रिपल तलाक को क्रिमिनलाइज कर दिया गया है। मैं पूछना चाहता हूं कि जब सुप्रीम कोर्ट ने होमो-सेक्सुअलटी को डिक्रिमिनलाइज कर दिया, एडल्ट्री को डिक्रिमिनलाइज कर दिया और आप ट्रिपल तलाक को क्रिमिनलाइज कर रहे हैं तो वाकई में आप नया हिन्दुस्तान बनाने जा रहे हैं, मैं मुबारकवाद देता हूं आपको।

तीसरी बात, सुप्रीम कोर्ट ने कहा, यह बिल भी कहता है कि अगर कोई मुसलमान गलती से अपनी बीबी को तीन बार तलाक कहता है, तब भी शादी नहीं टूटती है। यह बात आप बिल में कह रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट भी कह रहा है कि शादी नहीं टूटती है। यहां पर जितने एवाने अराकीन हैं, मैं उनको बताना चाहूंगा कि इस्लाम में नौ किस्म के तलाक हैं, जिनमें से एक है ट्रिपल तलाक। होता यह है कि अगर किसी मुसलमान ने तीन मर्तबा एक साथ तलाक कह दिया, यह औरतों के खिलाफ इसीलिए है कि उस मुस्लिम मर्द पर आज केस दर्ज करेंगे, वह पुलिस में जाकर बोलेगा कि मैंने तीन बार नहीं, एक बार कहा है। अब इस्लाम में यह चलन है कि तीन महीने के बाद तलाक हो जाता है। आप इस तरह का कानून बनाकर उस मर्द को मौका दे रहे हैं और उस औरत पर जुल्म कर रहे हैं। इसलिए मैं कह रहा हूं कि यह कानून मुस्लिम खवातीन के खिलाफ है।

चौथी बात, बर्डेन ऑफ प्रूफ में उस मर्द के घर से कौन कोर्ट में जाकर, उस कमजोर महिला, जिसके खिलाफ जुल्म किया गया है, उसकी ताईद में खड़ा रहेगा? आप बर्डेन ऑफ प्रूफ औरत पर डाल रहे हैं। आपको मुबारक हो, वाकई में यह आपकी अच्छी सोच है। आप शौहर को गिरफ्तार करके जेल में डालेंगे, जेल में डालने के बाद, क्या कोई शौहर जेल में बैठकर मेंटिनेंस देगा? अगर कोर्ट ने फैसला लिया कि उसे तीन साल सजा देते हैं तो क्यों वह औरत तीन साल तक उस शादी में रहे? क्या यह औरतों पर जुल्म नहीं है कि मर्द जेल में बैठा रहे और औरत उसके इंतजार में बैठी रहे? तीन साल के बाद जब वह जेल से निकलेगा तो क्या औरत यह कहे कि बहारों फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है? यह कौन सा इंसाफ है? आप क्यों औरतों पर जुल्म कर रहे हैं? उस औरत को उस शादी से निकलने को अख्तियार मिलना चाहिए, जो आप नहीं दे रहे हैं।

पांचवीं बात, बेल देने के बारे में बिल में कहा गया है कि कोर्ट खातून को सुनेगा। होम मिनिस्टर साहब यहां बैठे हैं, किसी मर्डर केस में आप विक्टिम को नहीं सुनते। बेल देने के बारे में प्रॉसिक्यूशन इंडिपेंडेटली बहस करता है और कोर्ट फैसला देता है। यहां आपने तय कर दिया, ऐसा न मर्डर के केस में है, न दफा 307 में है, लेकिन आप बोल रहे हैं।

यह कम्पाउंडेबल कब होगा? आप इसे महिला पर डाल रहे हैं। दफा 498 में ऐसा नहीं है, डोमेस्टिक वायलेंस में ऐसा नहीं है। जब डोमेस्टिक वायलेंस का कानून इस्तेमाल होता है तो एक ऑफिसर एप्वाइंट होता है, जो जाकर मियां-बीवी से बात करता है, फिर अपनी रिपोर्ट देता है। आप शादी को खत्म कर रहे हैं, औरत को रोड पर ला रहे हैं और उसके शौहर को जेल में डाल रहे हैं। (1605/RAJ/SMN)

सर, प्रिजम्पशन ऑफ इनोसेंस, यह एनडीपीएस एक्ट में होता है। यह टेररिस्ट एक्ट में होता है, आप वह भी छीन ले रहे हैं, आपको मुबारक हो। कोर्ट क्या कह रही है, *नॉन-एस्ट*, जब तलाक नहीं होता है तो फिर आप किस बात की सजा दे रहे हैं। मैं भी कानून का स्टूडेंट हूं। *एक्टस रियस* नहीं है, *एक्टस रियस* हुआ ही नहीं, मगर आप कह रहे हैं कि हम सजा देंगे।

सर, आप *पॉक्सो एक्ट* बड़ी नीयत से बना रहे हैं। मैंने आज नोबेल प्राइज विनर, कैलाश सत्यार्थी का स्टेटमेंट पढ़ा है। वह कह रहे हैं कि गुजरात में बच्चों का जो रेप होता है, उन केसेज को मुकम्मल करने के लिए 55 साल लगेंगे। कन्विक्शन रेट नौ प्रतिशत है। इस तरह के हस्सास केसेज में आप सजा नहीं दे रहे हैं और आप इंसाफ करने के लिए निकले हैं, आपको मुबारक हो।

सर, क्रिमिनल ज्यूरिसप्रुडेंस में तीन साल की सजा, 153(ए), 233, उसमें तीन साल, इसमें तीन साल गुस्से में ला रहे हैं। सर, आपका तीन साल बेसिक क्रिमिनल ज्यूरिसप्रुडेंस के अगेन्स्ट है। मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं। आपका मकसद क्या है? मैं आपके जरिए हुकूमत से सिफारिश करता हूं। आप लोग कुछ नहीं बोलते हैं, मैं आपको बोल रहा हूं। इस्लाम में निकाहनामा है। आप एक कंडिशन लगाइए कि कोई भी मुस्लिम मर्द अगर अपनी बीवी को ट्रिपल तलाक देता है तो मेहर के एमाउंट का पांच सौ फीसद देना पड़ेगा। Violation of a condition will lead condition will lead to conviction and to prison also. इस्लाम में शादी जन्म-जन्म का साथ नहीं है। यह एक कॉन्ट्रैक्ट है। यह ज़िंदगी के हद तक है और हम उसमें खुश हैं, लेकिन आप कह रहे हैं कि वह जन्म-जन्म का साथ है, नहीं बाबा, एक ही ज़िंदगी काफी है।…(व्यवधान) मैं यह क्यों कहता हूं?…(व्यवधान)

सर, अब जो शादी कर रहे हैं, जिनके पास बीवी है, उनको मालूम है। इसीलिए सब हँस रहे हैं।…(व्यवधान) सबको मालूम है कि क्या तकलीफ है। सभी बाहर जाकर जिंदाबाद कहेंगे लेकिन घर में क्या होता है, सभी को मालूम है।

सर, आर्टिकल 26 का वायलेशन क्यों है? आर्टिकल 26 में रिलिजियस डीनॉमिनेशन को अपने राइट को प्रोटैक्ट करने का अख्तियार है। हिन्दुस्तान में मुसलमान होमोजिनस नहीं है, हनफी, शिया और अहले हदीस हैं। मुख्तार अब्बास नकवी साहब चले गए, उनसे पूछ लीजिए शियाओं सेगा है, अहले हदीस मानते हैं लेकिन हनफी नहीं मानते। बार-बार जो इस्लामिक मुमालिक का उदाहरण देते हैं, आप जरा पढ़ लिया कीजिए। अल्जीरिया में शाफई है, केरल में शाफई है। ईरान में शिया है। यह गलत तरीका है। हमें इस्लामिक मुमालिक से मत मिलाइए। वरना रैडिकलिज्म बढ़ेगा। हमें इस्लामिक मुमालिक से मतलब नहीं है, हमें हिन्दुस्तान, भारत से मतलब है।

सर, आप सरकार की साफ नीयत देखिए। जब 'मी टू' मूवमेंट चला तो ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स की रिपोर्ट कहां गई? आपने ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स को डिसबैंड कर दिया। आपने अपने एमपी के खिलाफ एक्शन नहीं लिया। आपकी महिलाओं से मोहब्बत आपको मुबारक हो। हमारे भारत में 23 लाख हिन्दू महिलाएं हैं, जो अपने हसबैंड के साथ नहीं हैं। तो कहां गई आपकी मोहब्बत?...(व्यवधान)

सर, मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं। मैं कमजोर हूं, दो तो भगा दिए गए।...(व्यवधान) मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं। मुजफ्फरनगर में मुस्लिम महिलाओं के जो रेप हुए, उनके एक भी केस में कन्विक्शन नहीं हुआ। मुबारक हो, यह आपकी मोहब्बत है! जुलाई, 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि मॉब-लिंचिंग के खिलाफ कानून लाइए। आप अभी तक वह नहीं लाए, आप वह क्यों नहीं लाते हैं? मैं खत्म कर रहा हूं – लास्ट सन्टेन्स।

अगर आप वाकई में यह करना चाह रहे हैं तो जल्लीकट्टू पर ऑर्डिनैंस लाएं। क्या मुझे आर्टिकल 26 का प्रोटेक्शन नहीं मिलेगा, 29 का प्रोटेक्शन नहीं मिलेगा? अगर आप वाकई में महिलाओं की मदद करना चाहते हैं तो मैं आपके जरिये से सरकार से कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान के वज़ीरे आजम, हिन्दुस्तान के वजीरे दाखला, हिन्दुस्तान के वजीरे कानून, बीजेपी की जितनी महिला एमपीज हैं, उनको स्पेशल एयरक्राफ्ट में सबरीमाला लेकर जाइए, कृपया उन्हें लेकर जाइए। मैं अपनी बात खत्म करने से पहले कह रहा हूं कि यह कानून मुसलमानों को उनकी तहज़ीब, उनके तमद्दुन, उनके मजहब से दूर करने के लिए लाया गया है। हम जब तक भारत में रहेंगे, सुबह कयामत तक रहेंगे, अपने दीन पर रहेंगे, कुरान और सुन्नत पर रहेंगे, कानून बनाने से सोशल ईविल का खात्मा नहीं होता है। औरतों पर जो जुल्म हो रहा है, वह कानून से खत्म नहीं हुआ। मैं आपको कह रहा हूं कि राजीव गांधी जी ने जो कानुन बनाया, उसको सुप्रीम कोर्ट ने अपहेल्ड किया। अपने इल्म में इज़ाफा करें और अपनी *... (Not recorded)* का सबूत मत दीजिए। यह कानून मुस्लिम महिलाओं के साथ ज़ुल्म करेगा, इसीलिए मैं इसकी खिलाफत करता हूं।

(इति)

**جناب اسدالدین اویسی (حیدرآباد):** شکریہ، محترم اسپیکر صاحب، میں اس بِل کی مخالفت میں کھڑا ہوا ہوں، یہ میرا کنسٹینٹ اپروچ ہے۔ تیسری مرتبہ میں اس کی مخالفت میں کھڑا ہوا ہوں اور انشاءاللہ جب تک زندگی باقی رہے گی، اس بِل کی مخالفت کرتا رہوں گا۔

محترم اسپیکر صاحب، یہ بِل ہندوستان کی آئین کی دفعہ 26□21□15□14 اور 29 کی خلاف ورزی کرتا ہے۔ یہ ہمارے آئین کے بنیادی حقوق کی مخالفت کرتا ہے۔ اب آپ دیکھئے کہ ٹرِپل طلاق کو کریمِنِلائز کر دیا گیا ہے۔ میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ جب سپریم کورٹ نے ہومو سیکسویلیٹی کو ڈی کریمِنِلائز کر دیا ہے، ایڈلٹری کو ڈی کریمِنِلائزکر دیا اور آپ ٹرپل طلاق کو کریمِنِلائزکر رہے ہیں تو واقعی میں آپ نیا ہندوستان بنانے جا رہے ہیں، میں مبارکبادد دیتا ہوں آپ کو۔

تیسری بات، سپریم کورٹ نے کہا، یہ بِل بھی کہتا ہےکہ اگر کوئی مسلمان غلطی سے اپنی بیوی کو تین بار طلاق کہتا ہے تب بھی شادی نہیں ٹوٹتی ہے۔ یہ بات آپ بِل میں کہہ رہے ہیں۔ سپریم کورٹ بھی کہہ رہا ہے کہ شادی نہیں ٹوٹتی ہے۔ یہاں پر جتنے بھی ایوانِ اراکین ہیں میں ان کو بتانا چاہوں گا کہ اسلام میں 9 قسم کی طلاق ہیں، جن میں سے ایک ہے ٹرِپل طلاق۔ ہوتا یہ ہے کہ اگر کسی مسلمان نے تین مرتبہ ایک ساتھ طلاق کہہ دیا ، یہ عورتوں کے خلاف اس لئے ہےکہ اس مسلم مرد پر آج کیس درج کریں گے، وہ پولس میں جا کر بو لے گا کہ میں نے تین بار نہیں ایک بار کہا ہے۔ اب اسلام میں یہ چلن ہے کہ تین مہینے کے بعد طلاق ہو جاتا ہے۔ آپ اس طرح کا قانون بنا کر اس مرد کو موقع دے رہے ہیں، اور اس عورت پر ظلم کر رہے ہیں۔ اس لئے میں کہہ رہا ہوں کہ یہ قانون مسلم خواتین کے خلاف ہے۔

چوتھی بات، برڈن آف پروف میں اس مرد کے گھر میں کون کورٹ میں جا کر، اس کمزور عورت، جس کے خلاف کیا گیا ہے، اس کی تائید میں کھڑا ہوگا۔ آپ برڈن آف پروف عورت پر ڈال رہے ہیں۔ آپ کو مبارک ہو، واقعی میں یہ آپ کی اچھی سوچ ہے۔ آپ شوہر کو گرفتار کرکے جیل میں ڈالیں گے، جیل میں ڈالنے کے بعد، کیا کوئی

شوہر جیل میں بیٹھ کر مینٹی نینس دے گا؟ اگر کورٹ نے فیصلہ لیا کہ اسے تین سال سزا دیتے ہیں تو کیوں وہ عورت تین سال تک اس شادی میں رہے؟ کیا یہ عورتوں پر ظلم نہیں ہےکہ مرد جیل میں بیٹھا رہے اور عورت اس کے انتظار میں بیٹھی رہے۔ تین سال کے بعد جب وہ جیل سے نکلے گا تو کیا عورت یہ کہے کہ بہاروں پھول برساؤ، میرا محبوب آیا ہے۔ یہ کون سا انصاف ہے؟ آپ کیوں عورتوں پر ظلم کر رہے ہیں؟ اس عورت کو اس شادی سے نکلنے کا اختیار ملنا چاہئیے، جو آپ نہیں دے رہے ہیں۔

پانچوی بات، بیل دینے کے بارے میں بِل میں کہا گیا ہے کہ کورٹ خاتون کو سُنے گا۔ ہوم منسٹر صاحب یہاں بیٹھے ہیں، کسی مرڈر کیس میں آپ وِکٹِم کو نہیں سنتے ہیں۔ بیل دینے کے بارے میں پروسیکیوشن انڈیپینڈینٹلی بحث کرتا ہے اور کورٹ فیصلہ دیتا ہے۔ یہاں آپ نے طے کر دیا، ایسا نہ مرڈر کے کیس میں ہے، نہ دفعہ 307 میں ہے، لیکن آپ بول رہے ہیں۔

یہ کمپاؤنڈیبل کب ہوگا؟ آپ اسے عورت پر ڈال رہے ہیں۔ دفعہ 498 میں ایسا نہیں ہے، ڈومیسٹک وائلینس میں ایسا نہیں ہے۔ جب ڈومیسٹک وائلینس کے قانون کا استعمال ہوتا ہے تو ایک آفیسر اپوئنٹ ہوتا ہے، جو جا کر میاں بیوی سے بات کرتا ہے، پھر اپنی رپورٹ دیتا ہے۔ آپ شادی کو ختم کر رہے ہیں، عورت کو روڈ پر لا رہے ہیں اور اس کے شوہر کو جیل میں ڈال رہے ہیں۔

جناب، پریزمپشن آف انّوسینس، یہ این۔ڈی۔پی۔ایس۔ ایکٹ میں ہوتا ہے۔ یہ ٹیررسٹ ایکٹ میں ہوتا ہے، آپ وہ بھی چھین رہے ہیں، آپ کو مبارک ہو۔ کورٹ کیا کہہ رہی ہے، نان ایسٹ، جب طلاق نہیں ہوتا ہے تو آپ پھر کس بات کی سزا دے رہے ہیں۔ میں بھی قانون کا اسٹوڈینٹ ہوں ایکٹس ریس نہیں ہیں، ایکٹس ریس ہوا ہی نہیں، مگر آپ کہہ رہے ہیں کہ ہم سزا دیں گے۔

سر، آپ پاسکو ایکٹ بڑی نیت سے بنا رہے ہیں۔ میں نے آج نوبل پرائز وِنر کا اسٹیٹمینٹ پڑھا، وہ کہہ رہے ہیں کہ گجرات میں بچوں کا جو ریپ ہوتا ہے، ان کیسز کو مکمل کرنے کے لئے 25 سال لگیں گے۔ کنوِکشن ریٹ 9 فیصدہے۔ اس کے حساس

کیسزمیں آپ سزا نہیں دے رہے ہیں اور آپ انصاف کرنے کے لئے نکلے ہیں، آپ کو مبارک ہو۔

سر، کریمنل جیورِسپروڈینس میں تین سال کی سزا، 153 (A), 233, اس میں تین سال، اس میں تین سال غصہ میں لا رہے ہیں۔ تین سال کی سزا بیسِک کریمنل جیورسپروڈینس کے خلاف ہے۔ میں اپنی بات ختم کر رہا ہوں۔ آپ کا مقصد کیا ہے؟ میں آپ کے ذریعہ حکومت سے سفارش کرتا ہوں۔ آپ لوگ کچھ نہیں بولتے ہیں، میں آپ کو بول رہا ہوں۔ اسلام میں نکاہ نامہ ہے۔ آپ ایک کنڈیشن لگائیےکہ کوئی بھی مسلم مرد اگر اپن بیوی کو ٹرِپل طلاق دیتا ہے تو مہر کے اماؤنٹ کا 500 فیصد دینا پڑے گا۔ Violation of a condition will lead condition will lead to conviction and to prison also. اسلام میں شادی جنم جنم کا ساتھ نہیں ہے۔ یہ ایک کانٹریکٹ ہے۔ یہ زندگی کی حد تک ہے اور ہم اس میں خوش ہیں، لیکن آپ کہہ رہے ہیں کہ جنم جنم کا ساتھ ہے، نہیں بابا ایک ہی زندگی کافی ہے۔۔ (مداخلت)۔۔ میں یہ کیوں کہتا ہوں۔۔ (مداخلت)۔۔

سر، اب جو شادی کر رہے ہیں، جن کے پاس بیوی ہیں، ان کو معلوم ہے۔ اس لئے سب ہنس رہے ہیں۔ (مداخلت)۔۔ سب کو معلوم ہے کہ کیا تکلیف ہے۔ سبھی باہر جا کر زندہ باد کہیں گے، لیکن گھر میں کیا ہوتا ہے سبھی کو معلوم ہے۔

سر، آرٹیکل 26 کا وائلیشن کیوں ہے؟ آرٹیکل 26 میں ریلیجیس ڈینو مینیشن کو اپنے رائٹ کو پروٹیکٹ کرنے کا حق ہے۔ ہندوستان میں مسلمان ہوموجینس نہیں ہیں، حنفی، شیعہ و اہلِ حدیث ہیں۔ آپ مجھے بتائیے، مختار عباس نقوی صاحب، چلے گئے، ان سے پوچھ لیجئے شیعاؤ میں صیغہ ہے، اہلِ حدیث مانتے ہیں، حنفی نہیں مانتے۔ بار بار جو اسلامک ممالک کی جو مثال دیتے ہیں، آپ زرا پڑھ لیا کیجئے۔ الجیریا میں شافعی، کیرل میں شافعی ہیں۔ ایران میں شیعہ ہیں۔ یہ غلط طریقہ ہےہمیں اسلامک ممالک سے مت ملائیے، ورنہ ریڈیکُلزم بڑھے گا۔ ہمیں اسلامک ممالک سے مطلب نہیں ہے، ہمیں اسلام سے مطلب ہے۔ ہندوستان سے مطلب ہے۔

**سر، آپ سرکار کی صاف نیت دیکھئے۔ جب می۔ٹو۔ موومینٹ چلا تو گروپ آف منسٹر کی رپورٹ کہاں گئی؟ آپ نے گروپ آف منسٹر کو ڈیسبینڈ کر دیا۔ آپ نے اپنے ایم۔پی۔ کے خلاف ایکشن نہیں لیا۔ آپ کی خواتین سے محبت، آپ کو مبارک ہو۔ ہمیں ہمارے ہندوستان میں 23 لاکھ ہندو خواتین ہیں جو اپنے شوہر کے ساتھ نہیں ہیں، تو کہاں گئی آپ کی محبت (مداخلت)۔۔**

**سر، میں اپنی بات ختم کر رہا ہوں، میں کمزور ہوں، دو تو بھگا دئے گئے (مداخلت)۔ میں اپنی بات ختم کر رہا ہوں۔ مظفر نگر میں مسلم خواتین کی جو ریپ ہوئی ان کے ایک بھی کیس میں کنوِکشن نہیں ہوا، مبارک ہو، یہ آپ کی محبت ہے۔ جولائی، 2018 میں سپریم کورٹ نے کہا ہے کہ ماب لنچنگ کے خلاف قانون لائیے۔ آپ ابھی تک وہ نہیں لائے، آپ وہ کیوں نہیں لاتے ہیں۔ میں ختم کر رہا ہوں۔**

**اگر آپ واقعی میں یہ کرنا چاہ رہے ہیں تو جلی کٹّو پر آرڈیننس لائیے۔ کیا آرٹیکل 29 کا مجھے پروٹیکشن نہیں ملے گا؟ اگر آپ واقعی میں خواتین کی مدد کرنا چاہتے ہیں تو میں آپ کے ذریعہ سے سرکار سے کہنا چاہتا ہوں کہ ہندوستان کے وزیرِ اعظم، ہندوستان کے وزیرِ داخلہ، ہندوستان کے وزیرِ قانون، بی۔جے۔پی۔ کے جتنی مہیلا ایم۔پیز ہیں ان کو اسپیشل ائر کرافٹ میں سبری مالہ لے کر جائیے، کرپیا انہیں لے کر جائیے۔**

**میں اپنی بات ختم کرنے سے پہلے کہہ رہا ہوں کہ یہ قانون مسلمانوں کو ان کی تہذیب، تمدّن، ان کے مذہب سے دور کرنے کے لئے لایا گیا ہے۔ ہم جب تک ہندوستان میں رہیں گے صفِ قیامت تک رہیں، اپنے دین پر رہیں گے، قرآن اور سنت پر رہیں گے۔ قانون بنانے سے سوشل ایوِل کا خاتمہ نہیں ہوتا ہے۔ عورتوں پر جو ظلم ہو رہا ہے، وہ قانون سے ختم نہیں ہوا ہے۔ میں آپ کو کہہ رہا ہوں کہ راجیو گاندھی جی نے جو قانون بنایا، اس کو سپریم کورٹ نے اپ ہیلڈ کیا۔ اپنے علم میں اضافہ کرو اور اپنی جہالت کا ثبوت مت دیجئے۔ یہ قانون مسلم خواتین کے ساتھ ظلم کرے گا، اس لئے میں اس کی مخالفت کرتا ہوں۔۔ شکریہ**

**(ختم شد)**

(1610/IND/MMN)

1610 बजे

**श्रीमती पूनम महाजन (उत्तर मध्य मुम्बई):** अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे इस बिल पर बोलने का मौका दिया, मैं इसके लिए आपका धन्यवाद करती हूं। इस मौके पर चौका कैसे होगा, क्योंकि आपने मुझे किसी और के बाद बोलने का मौका दिया है। जिन्होंने इतनी मुबारकबादें दी हैं, उन्हें भी दो-चार मुबारकें हम भी दे दें। मैंने देखा कि बहुत सारे लॉ के अभ्यास विशारद यहां बैठे हुए हैं, जो पहली शादी में ही अपनी पत्नी से तंग आ गए हैं। जब उन्होंने मुबारकबाद दी, तो मुझे इस बात का इल्म हुआ कि वे हम सभी को मुबारकबाद दे रहे हैं। यहां चचा बैठे थे, जो चिल्ला रहे थे, हम सभी यहां बैठे हैं। मैं भी एक बेटी की माँ हूं। मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि यदि कल गलती से आपके खुशहाल परिवार में उस बेटी को व्हॉट्सएप पर तलाक, तलाक, तलाक बोल दिया तो हम आपको मुबारकबाद देंगे या आपके लिए दुखी होंगे। आपकी मुबारकबाद का क्या अर्थ है? महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए मुझे मेरी बचपन की कहानी याद है। मैं स्वयं मराठी से पढ़ी हूं। हम अंग्रेजी दस-बारह साल के होने के बाद सीखते हैं। तब 'ही' और 'शी' का मतलब सीखते हुए आगे बढ़ रहे थे। मैंने एक बार अपने पिताजी से पूछा कि बाबा how is 'he' or 'she' placed? उन्होंने कहा कि 'ही' पुरुष होता है और 'शी' महिला होती है। मैंने कहा कि 'ही' और 'शी' क्यों होता है। तब उन्होंने कहा कि 'ही' पुरुष होता है, लेकिन 'ही' के पहले 'एस' लगाया है क्योंकि superior to 'he' वह महिला 'शी' होती है, यह मेरे पिताजी ने सिखाया है। इसी विचारधारा को लेकर हम चलते हैं। इसी बात पर मैं अपने प्रधान मंत्री जी को मुबारकबाद देना चाहती हूं कि उसी superior to 'he' को वे ताकत देना चाहते हैं, आगे बढ़ाना चाहते हैं और इसलिए यह बिल लाए हैं।

महोदय, जब हम विवाह पद्धति के बारे में बात करते हैं, it is a sacred institution. आप उसे बिजनेस कहते हैं या पता नहीं क्या कहते हैं। शायद कांट्रेक्ट कहते हैं। हमारे में विवाह एक पवित्र संस्कार माना जाता है और इस पवित्र संस्कार को चाहे कोई भी धर्म हो, जाति हो, वे चाहे कोई भी हों चाहे हिंदू हों, मुसलमान हों या क्रिश्चियन हों, in sickness and health, I am with you. जब मैं तुम्हारे साथ शादी कर रहा हूं तो मैं तुम्हारे साथ रहूंगा, मैं तुम्हारे साथ रहूंगी। जब सप्तपदी में हम शपथ लेते हैं, तो हर सात सवालों पर हम एक-दूसरे के साथ रहते हैं। हम ये विचार लेकर चलते हैं। मैं मुबारकबाद इसलिए देना चाहती हूं कि इसी पद्धति को हर किसी को उस ताकत के रूप में आगे बढ़ाना चाहते हैं। धर्म की परिभाषा हर कोई अपने रूप से बता सकता है। धर्म की परिभाषा अपने रूप से कोई भी आगे ले जा सकता है, लेकिन धर्म की परिभाषा के साथ जिस समाज में हम रह रहे हैं, उस समाज की परिभाषा भी धर्म के साथ आगे बढ़नी चाहिए। आज समाज बदल रहा है। समाज यह विचार कर रहा है कि आज जिस रूप से भारत आगे बढ़ रहा है, विश्व आगे बढ़ रहा है, हमें हमारे धर्म के विचारों में भी कहीं न कहीं बदलाव लाना चाहिए। मैं कहना चाहती हूं कि मैं जिस धर्म से हूं, हम उसमें भी बदलाव लाएं। बदलाव पर कई विषय पहले भी चले हैं, चाहे सती प्रथा हो या बाल विवाह हो या कोई भी अन्य विषय हो, उसमें भी समाज सुधारक आगे आए और उन्होंने कई बदलाव किए।

वर्ष 1956 में हमें डायवोर्स के लिए ताकत मिली कि ऐसा न हो कि पति को अच्छा न लगे और वह पत्नी को छोड़ दे, यदि पत्नी चाहे तो वह भी लड़ सकती है। यह ताकत हमें समाज में हमारे कानून ने दी है। कानून यही कहता है कि समानता हर किसी को चाहिए। हम गांधी जी के तीन बंदरों की बात करें। एक कहता है कि बुरा न सुनें, एक कहता है कि बुरा न बोलें और एक कहता है कि बुरा न देखें। लेकिन कानून ने हमें यह सिखाया है कि समाज में बुरा हो तो उसे सहना भी नहीं चाहिए और उस सहने के खिलाफ हम सभी हैं। 21वीं सदी में मंगल ग्रह पर यान भेजने की बात हो रही है। आज इसरो में सबसे ज्यादा महिला वैज्ञानिक हैं और अभी भी हम मुबारकबाद दे रहे हैं कि महिलाओं को तीन तलाक न दें, तो चल जाएगा, कुछ नहीं होता। उसके बारे में हम क्या कर सकते हैं। मुझे दुख होता है कि यहां कई महिला सांसद बैठी हैं। हमें प्लेन में कहां जाना है या नहीं जाना है, यह बाद में तय करेंगे, हमें जो सुप्रीम कोर्ट ने कहा है हम उस बात को मानते हैं। सुप्रीम कोर्ट की बात हम सर झुकाकर सुनते हैं। यहां बहुत सारी महिला सांसद बैठी हैं। मुझे अच्छा लगा कि वे अपने भाइयों के लिए लड़ रही हैं कि भाई जेल कैसे जाए। ऐसे कैसे हमारा भाई जेल जाएगा। वे सोच रही हैं कि यह समाज सुधार की बात नहीं है, बल्कि मेरे भाइयों के खिलाफ बात कर रहे हैं। मैं सदन में यही प्रश्न उठाना चाहती हूं कि जब मेरे घर की बहू-बेटी के लिए कोई एसएमएस पर कहेगा कि तुम्हें मैंने तलाक दे दिया, उसे रास्ते पर ले आएगा, तो उस रास्ते पर आने वाली लड़की के लिए यह गलत नहीं होगा कि हम चुप रहें। (1615/PC/VR)

अगर हमारी बहू-बेटी पर कोई आंख भी उठकार देखता है तो हम कहते हैं कि हम उसको छोड़ेंगे नहीं। फिर हम यह कानून क्यों नहीं बना सकते कि जो यह करेगा, पहला, दूसरा, तीसरा जेल में जाएगा, लेकिन चौथा और पांचवां व्यक्ति सोचकर बोलेगा कि तलाक बोलूं या न बोलूं, इसलिए यह कानून बनाया गया है। इस सदन में यह चर्चा क्यों हो रही है? इस बिल पर चर्चा इसलिए हो रही है, क्योंकि अगर खाने में नमक नहीं है तो तलाक, तलाक, तलाक। मुझे तुम्हारे दांत ठीक नहीं लगते - तलाक, तलाक, तलाक। ये कहानियां हैं, आप इन्हें पढ़िये। मुझे तुम्हारी शक्ल पसंद नहीं - तलाक, तलाक, तलाक। मुझे पांच और औरतों की शक्ल पसंद है, जैसे एक ही शादी कई जन्मों का रिशता न हो, ऐसा यहां पर कहा जा रहा है। मुझे पांच औरतों की शक्ल पसंद है - तलाक, तलाक, तलाक। यह तलाक है या मज़ाक है? महिलाओं की ज़िदगी के साथ खेलना और उस प्रताड़ना पर हम सबके द्वारा मज़ाक करना, मुझे नहीं लगता कि ठीक है।

हम इसी कानून को लेकर आगे बढ़ना चाहते हैं। Reform is all about society. यहां पर बैठे हुए हम लोग सोशल रिफॉर्मर्स भी हैं। हम जो कानून बनाते हैं, उससे सोशल रिफॉर्म भी होना चाहिए। हमारा काम सिर्फ यह नहीं है हम कानून बनाते रहें, हमारा काम है कि हम हम उससे आने वाली जनता को, समाज को आगे बढ़ाएं। मैं इस सदन से यह अपेक्षा करती हूं। मैं माननीय मंत्री जी से इतना ही कहना चाहती हूं कि मंत्री जी, आप एक-दो लोगों की बात न सुनते हुए, जो आपको मुबारकबाद दे रही हैं, उन दस लाख महिलाओं की बात सुनिए, जिन्होंने आपको पेटिशन साइन कर के दी है। मेरी हर मुस्लिम बहन कह रही है कि मुझे ट्रिपल तलाक नहीं चाहिए, मैं ये सब-कुछ नहीं कर सकती, मुझे तुम रास्ते में फेंक नहीं सकते। यहां पर कानून पर कानून बनाए जा रहे हैं, आप इस

कानून को तो समर्थन दीजिए। हर वक्त प्रिवेंशन क्योर से बैटर होता है। यह कानून एक रूप से प्रिवेंशन है। हमें इस प्रिवेंशन को समर्थन देना चाहिए।

मैं इसमें थोड़े-बहुत सजेशन्स भी देना चाहती हूं। महिलाओं के सम्मान और समानता के लिए हम यह कानून ला रहे हैं। मैं यहां पुरुष सांसदों से पूछना चाहती हूं। हिन्दू परिवारों में दहेज का मौका था, दहेज अब क्रिमिनल ऑफेंस हो गया है। अगर कोई भी दहेज मांगता है तो हम उसको, सिर्फ उसको नहीं, उसके पूरे परिवार को जेल भेज सकते हैं। किसी मुस्लिम पिता को कैसा लगेगा जब उसकी बेटी से बोला जाए कि तुमसे हम दहेज तो लेंगे, लेकिन तुम्हारे साथ शादी नहीं करेंगे। इस रूप में यहां बैठे हुए सारे पिता इस बात को नहीं सोचते हैं? क्या आप अपनी बेटी-बहू पर यह प्रताड़ना देख सकते हैं?

यह विषय पॉलिटिक्स से ऊपर है। यह समाज के रिफॉर्म का एक इमोशनल विषय है। इस विषय को देखना बहुत ज़रूरी है। मैं आदरणीय मंत्री जी को यह सजेशन भी देना चाहती हूं कि इस एक्ट में जो पहले के बहुत सारे पेंडिंग केसेज़ हैं, आप उन्हें एक्ट में लेंगे, तो इसका बहुत बड़ा फायदा होगा। जिस 'सुपीरियर-ही' के बारे में हम बात कर रहे हैं, उस धर्म के सुधार के लिए हम जहां खड़े हैं, हम उन्हीं महिलाओं को आगे बढ़ाना चाहते हैं।

आदरणीय प्रधान मंत्री मोदी जी ने उज्ज्वला योजना से करोड़ों गैस सिलेंडर्स दिए, महिलाओं की सुरक्षा और उनके सम्मान के लिए शौचालय दिए तो क्या उन्होंने यह सोचकर दिया था कि ये मेरी मुस्लिम बहनें हैं, ये मेरी हिन्दू बहनें हैं, ये मेरी ये बहनें हैं, ये मेरी वो बहनें हैं? नहीं। महिलाओं को कभी भी आप जाति और धर्म में नहीं बांट सकते। महिलाओं का सम्मान और धर्म वो और उसका परिवार होता है। आप ट्रिपल तलाक देकर उसको उसके परिवार से दूर करेंगे तो आप सबसे बड़ा गुनाह और पाप कर रहे हैं।

मैं अंत में इतना ही कहना चाहती हूं कि जिस प्रकार यह कहा जाता है कि ट्रिपल तलाक अनपढ़ लोगों में होता है, गांवों में होता है। ऐसा नहीं होता है। आपने जयपुर की एमबीए की हुई बेटी आफरीन की कहानी सुनी होगी। ऐसी बहुत सारी कहानियां हैं। पढ़ी-लिखी लड़की को पति ने छोड़ दिया और उसे ट्रिपल तलाक दे दिया। मैं यही जानना चाहती हूं कि सुप्रीम कोर्ट ने हमें जो अवसर दिया है, यह हमारा सौभाग्य है कि हम इस अवसर को आगे ले जा रहे हैं। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस चुनाव के बाद इस सरकार को 'वुमेन लेड डेवलपमेंट' सरकार बनाया है। जब महिला आगे बढ़ेगी, तब ही देश आगे बढ़ेगा, इसलिए यह समानता का कानून बहुत ज़रूरी है।

अध्यक्ष जी, मैं अंत में इतना ही कहूंगी - एक खौफ था सफर में उनसे, कहीं कोई बात न चुभ जाए ऐसी जो साथ छोड़ दे हमसफर मेरा, कहकर तलाक-ए-बिद्दत के वो तीन बोल तू क्या देगा तलाक-ए-कायर, आज इंसाफ हुआ खुदा की इबादत पर सदियों की खाक में से एक चिराग सुलगाया है, आज पहली बार मुझे मुझसे मिलवाया है, यह वो मुस्लिम बहन बोल रही है, शाहबानो की तकलीफ की खाक से शायरा बानो ने एक चिराग सुलगाया है और उस चिराग के साथ हर एक मुस्लिम महिला के साथ खड़े रहकर आदरणीय प्रधान मंत्री ने उसको उससे मिलवाया है। मैं आदरणीय मंत्री रवि

शंकर प्रसाद जी को धन्यवाद देना चाहती हूं। यह बिल सिर्फ महिला सशक्तीकरण का नहीं है, बल्कि पूरे विश्व को हमारी ताकत दिखाने का है।

(1620/SPS/SAN)

सबका साथ, सबका विश्वास और सबको साथ लेकर, महिलाओं को सम्मान देकर, महिलाओं को आगे बढ़ाकर, नारी तू नारायणी यह सिर्फ विचारधारा नहीं, हम करके दिखाते हैं। ये सब करके हम बिल को आगे बढ़ाएं। मैं इस बिल को समर्थन देना चाहती हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

**माननीय अध्यक्ष:** माननीय सदस्यगण, जो समय बी.ए.सी. में अलॉट था, वह समाप्त हो चुका है। मैं सभी माननीय सदस्यों से आग्रह करूंगा कि वे संक्षिप्त में अपनी बात कहें।

1620 hours

ADV. A.M. ARIFF (ALAPPUZHA): Sir, I thank you. You always inform about the timing when I am to speak.

Sir, at the outset, I fully agree with the view that triple talaq is uncivilised. It does not exist in many Muslim countries, including Pakistan, Indonesia, Bangladesh and Egypt. I also support the Supreme Court's verdict that it is unconstitutional. As we all know, the verdict of the Supreme Court is the law of the land. If the Supreme Court has pronounced a judgement that triple talaq is illegal, it is considered as illegal by our existing laws themselves. Then, what is the need of introducing a Bill of this kind?

The Muslim minorities in our country are living in a feel of fear. This feeling is increasing day by day. It is because you are passing Bills on NIA, UAPA and now, triple talaq, targeting the Muslims. So, I vehemently oppose the Bill.

My first contention is that the Bill is discriminatory in nature. It deals with the cases under the Code of Criminal Procedure. It is to be noted that all the other religious marriage Acts deal with the cases under the Code of Civil Procedure and have simple penal provision in case of violation. It violates Article 14 of the Constitution that ensures equality before the law or the equal protection of the laws.

If a woman simply comes to a police station and files a false petition before the SHO, then the SHO can take her husband into custody and sent him to jail, without bail, for three years. Further, it is surprising to note that a husband can be jailed upon the complaint of any person related to his wife by blood or marriage. This provision can be misused at various levels. Do you think about the consequences of this provision? I would like to seek a clarification from the hon. Minister. If the husband goes to jail, then who will pay the maintenance? The bail may be granted by a magistrate only after hearing the woman. It contravenes the relevant sections of the CrPC and the Evidence Act. As per the existing CrPC and the Evidence Act, the witness comes only at the time of taking evidence. The hon. Minister himself is an eminent lawyer. Here, the witness comes into picture at the time of granting bail.

Sir, we all know that Indian courts are clogged with a large number of cases and notorious for their long pendency. I feel that it is also relevant to bring

to your attention the complaints under Section 498A of the IPC. In many cases, the hon. Supreme Court has observed that it is used as a weapon rather than a protection. The case of Arnesh Kumar *versus* State of Bihar is an example. So, in false cases, chance of getting a bail is more difficult under the provisions of the Bill. Also, in 2017, the Supreme Court had said that the bail plea may be decided as far as possible on the same day. Bail is the right of an accused and a cardinal principle laid by CrPC. The intention of the Government is very clear. It is adopting a policy of jail, not bail.

It is to be noted that the educational and social backwardness was responsible for the condition of Muslim women far more than triple talaq. I would request the hon. Government to take necessary steps in this regard.

By the verdict of the hon. Apex Court, triple talaq is null and void. So, there is no need of bringing a legislation in this regard.

Thank you.

(ends)

(1625/RBN/MM)

1625 hours

SHRI JAYADEV GALLA (GUNTUR): Sir, thank you. I spoke on this Bill at length on 27th December, 2018. This Bill continues to criminalise a civil act and, therefore, there is no change in my Party's stand.

1625 hours (Shri N.K. Premachandran *in the Chair*)

I have been sitting through the debate right from the beginning. I do not think there is a single party in this House that wants to support the act of triple talaq. The House is unanimous in saying that we condemn this practice and we want to make it illegal. The only thing that everyone from the Opposition seems to be objecting to is making it a criminal act.

The Bill is a consequence of the Supreme Court judgement in Shayara Bano versus the Union of India case. It set aside the practice of Talaq-e-Biddat, which is otherwise known as triple talaq.

From what I have been able to understand, there are two types of legal divorce in Islam. One is Kula which is initiated by the wife with the husband's consent and the other is Talaq-e-Sunnah, which is initiated by the husband. I just want to briefly go through that a little bit for the sake of background. I won't take much time. Divorce is not taken lightly in the Muslim community. Men and women are required to follow a process that involves separation of at least three months or three menstrual cycles. During these three months, efforts for reconciliation are made. If they fail the divorce is finalised and the husband has to pay a *Mehr* or a bride price, which is a mandatory payment paid or promised by the groom to the bride at the time of marriage itself. The logic behind the three month waiting period is, to ensure that the wife is not pregnant at the time of separation. If she is, child support also figures in the divorce proceedings. The other reason is to allow each other enough time to find a place to live so the husband and the wife are not left in the streets.

Talaq-e-Biddat or instantaneous talaq being followed by some misogynistic Muslim men is not in consonance with Quran which many hon. Members have already mentioned. So, the demand of Muslim women that talaq should be Talaq-e-Sunnah and not Talaq-e-Biddat is absolutely justified.

If you look at the world scenario, particularly in Islamic countries, many of them have either banned triple talaq or regulated it, like our neighbour Pakistan, which passed the Muslim Family Laws Ordinance in 1961 or in Morocco which introduced the Moroccan Family Code in 2004. Similarly, 20 countries, such as Egypt, Turkey, Tunisia, Bangladesh, as the Minister said, have already banned this. We should ban it as well.

Coming to the Bill, the main issue remains the same. According to Clause 4 of the Bill if the husband leaves the wife pronouncing triple talaq, he is punished with imprisonment for a term which may be extended to three years and a fine. I have one simple question. What if a Muslim man does not say triple talaq and abandons his wife? What happens in that case? Does he go to jail? No, he does not. So, this is something, I think, we need to look at.

Marriage is a civil contract. The Government, through this Bill, is saying that breaking up this civil contract is a criminal offence. That is not a good precedence for many other instances of civil law.

The other point to be noted is this. The Supreme Court has already pronounced triple talaq as invalid. So, if the husband leaves the wife after pronouncing triple talaq it amounts to abandonment. So, I am sure everyone in this august House agrees that rules and laws should apply equally to everyone in this country irrespective of caste or religion one belongs to. If a Hindu or a Christian man abandons his wife, is he jailed or fined? I do not think so. Why should a Muslim man go to jail for abandoning his wife when Christians and Hindus do not suffer the same consequences.

(1630/SM/SJN)

Clause 5 of the Bill reads: 'A married Muslim woman upon whom triple talaq has been pronounced, shall be entitled to receive from her husband such amount of subsistence allowance for her and the development of children' …(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON (SHRI N. K. PREMACHANDRAN): Please conclude now.

SHRI JAYADEV GALLA (GUNTUR): Sir, I looked at the 2011 Census to get some data. Table no. C-3 is related to marital status of women of religious community. Sir, there are 2.3 million women in this country, according to the 2011 Census, who are either separated or abandoned, more than two times the number of divorced women. Out of 2.3 million women, 2 million women are Hindu women; 2.8 lakhs are Muslim women; 0.9 lakhs are Christian women; and 0.8 lakhs are other women.

What are we going to do about 2 million Hindu women or almost 1 million Christian women who are abandoned? Is the law not going to take care of them? It is only taking care of 10 per cent of the abandoned women in this country. What about the other 90 per cent women who are abandoned? How are they supposed to survive?

Clause 7 says that the Government has made triple talaq a cognizable and non-bailable offence, subject to scrutiny by Magistrate. Both these laws are contradictory. One is about providing subsistence allowance and the other is about being put into the jail. On the one hand, you are expecting the husband to provide financial assistance to wife and children and, on the other hand, you are shipping him off to jail, while the family suffers in the outside world. Many hon. Members have brought in this point. I would like to hear the hon. Minister's response on this.

Sir, I would like to reassert that the Telugu Desam Party is totally against Triple Talaq. We are all for women's rights. But this Bill seems to be discriminatory. Therefore, we do not support this Bill. We urge the Government to withdraw the Bill and bring out a new one to make Triple Talaq illegal without making it a criminal offence.

(ends)

1632 hours

SHRIMATI APARAJITA SARANGI (BHUBANESWAR): Hon. Speaker, Sir, I am a woman and I have been given this opportunity to speak on this important Bill. I feel privileged and I profusely thank you.

Sir, as I stand up to talk about this Bill, I am reminded of a quote from Gloria Steinem. She was a prolific writer. She said: “The story of women's struggle for equality belongs to no single feminist nor to any one organization. It belongs to the collective efforts of all who care about human rights.” I underscore this expression ‘human rights’. We are not talking of Indian women, Muslim women or Hindu women. We are talking of human beings.

Sir, I must tell you that this particular day is a historic day. I wonder how many women from all walks of life, from all sections, especially the Muslim women must be glued to the TV set and are waiting for a positive response from Lok Sabha regarding this particular Bill. I am sure they all must be glued to the TV set and are awaiting with bated breath.

I think all of us need to commend the efforts of the Government and the hon. Prime Minister for having shown the courage to come up with this kind of Bill. This Bill in the Lok Sabha is not something new. This has come twice. This has been debated upon and the suggestions that have been worthwhile have been incorporated.

Sir, this Bill is a logical culmination of the verdict given by the hon. Supreme Court in Shayara Bano case on 22nd August, 2017. Since morning, we have been discussing about it. We are aware of the judgement. The judgement was clear. It very clearly held that *talaq-e-biddat* violated constitutional morality and was against the tenets of the Holy book of Quran. We are aware of this very fact.

Sir, I must say that this historic judgement was a step towards liberating Indian Muslim women from the whimsical and capricious method of divorce. There is no room for conciliation. This is absolutely against the principles of natural justice. This violates human rights and this is against the concept of women empowerment that all of us have been talking about.

Sir, in 1984, when the famous Shayara Bano case had come up, I was in high school.

(1635/AK/KN)

We were all so very excited when the judgement had been passed. A particular Muslim sister of ours goes to the court, and seeks sustenance and maintenance from her husband who had pronounced instant 'triple *talaq'* -- the three words. She needs sustenance, and she needs maintenance. Of course, I must thank the then Supreme Court. In fact, the Judges there came up and stood in favour of this woman, *Shah Bano*. I remember that we were in High School, and there was a celebration in the girls High School.

We celebrated the judgement of the Supreme Court. But, unfortunately, come what may, we see one fine day that the then Congress Government nullified the effect of this great judgement and it limited the alimony to just 90 days of divorce. इस्लामिक लॉ में जो इद्दत, पीरियड है, उसी समय यह एलिमनी दिया जाएगा। ऐसा कहा गया था। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति थी।

Sir, with all conviction at my command, but at the same time with all humility, I would say that there cannot be a better time than today to put an end to such regressive notions of patriarchy, which treat women in an undignified manner. This is a classic example of inadequate policy response to such social practices in the name of religion.

Yesterday, when I was told that I had to speak today on this issue, I went through all the discourses or all the deliberations that had taken place in the Lok Sabha when this Bill had come up for debate. I went to the library, and I sat there till late hours and I was going through the discourses. I am extremely happy to place before this august House, and I also need to congratulate the hon. Minister and the Government headed by hon. Prime Minister for having incorporated all the worthwhile suggestions. It is a cognizable offence, but there are ways on how to do it. This has already been discussed and I need not delve deep into it.

It is definitely a non-bailable offence, but there is conditional bail. We are also talking of compoundable offence. We are all aware of something compoundable, namely, if the couple wants to settle the dispute outside the court, then they can do it and the Magistrate will take note of it. Of course, there is the issue of allowance also. The *Shah Bano* case would not have happened had this Act been there at that point of time. We need to give the subsistence allowance. It was under Section 125 of the Criminal Procedure Code.

Of course, there is the issue of custody of children also. Imagine, women are on the streets. Where will the children go? So, it is a very good thing that has been brought in, and I once again congratulate the hon. Minister and the Government for having thought about all these humane elements. It takes a toll on the mental health of children if father and mother separate themselves from each other. So, definitely it is a great thing that the custody issue has also been brought in here.

Since morning, I have been sitting here in this particular seat and listening to all the discourses. I am surprised that there is absolutely no content or substance. Where is the logic or argument for it? Why should we say no to this Bill? There is absolutely no convincing logic whatsoever. Nearly, 20 Islamic countries have banned this. In this Parliament, there have been legislations against dowry and *sati*, then what is the problem about this particular thing that we are talking about?

I was going through a '*Business Standard*' Report -- I am sorry that I am mentioning the name of the newspaper -- where the hon. Minister had been quoted. I have done a good deal of research last night. At that point of time in December, 2018, the hon. Minister had mentioned this in the '*Business Standard*' Report.

(1640/SPR/CS)

Between January 2017 and December 2018, more than 477 cases of Triple *Talaq* had been registered. This is unfortunate because this was after the 22nd August 2017 judgement of the Supreme Court. We have just discussed the violation of constitutional morality. I know it is time to wind up but at the same time this is an historic opportunity for all of us in this august House; we all need to unanimously support this particular Bill cutting across party lines. It is a question of women; it is a question of her rights; it is a question of human rights. That is why, we need to support it.

I am reminded of a quote from the departed leader, Nelson Mandela. He said, "Freedom cannot be achieved unless women have been emancipated from all forms of oppression." Before I conclude, I would just like to make a remark – somebody said, and I have read somewhere – when men are oppressed, it is a tragedy. I repeat, when men are oppressed, it is a tragedy. …(*Interruptions*) But when women are oppressed, it is a tradition. This is not acceptable. And this tradition of oppression of women must go. On behalf of all the Muslim sisters of the country, I will appeal to all the Members of this august House to unanimously come forward and support this Bill.

(ends)

1642 hours

SHRI E.T. MOHAMMED BASHEER (PONNANI): Sir, I oppose this Bill. This Bill is unconstitutional, unwarranted, biased and ill-motivated. I have closely been listening to the former speakers. Many stories have been told here about Triple *Talaq.* There are electronic *talaq,* WhatsApp *talaq,* etc. Many coloured stories were told. I would like to say with all humbleness that this kind of argument in support of this Bill is far away from the truth. We have to think about it.

Muslim population in this country varies from 13 to 14 per cent. Out of this, according to the 2011 Census, divorce rate among Muslims is 0.56 per cent only. In this, many are *talaq*-related. In *talaq* itself, how many Triple *Talaq* cases are there? You all know that. So, you are trying to create a myth here. Such fabricated stories will not have life. You are not going to succeed in this. Your approach is not at all correct. I would like to say that this is a clear violation of Article 25 of the Constitution which guarantees the freedom of faith, and prophesying the faith.

The Supreme Court has ultimately declared that Triple *Talaq* is null and void. As correctly asked by the speakers who spoke before me, I would also like to add to the viewpoint, and ask the Government as to what is the necessity of bringing another legislation. As far as my Party is concerned, we were maintaining the same stand in this and on Sabarimala. We are of the opinion that Article 25 is giving us a fundamental right. Muslim Personal Law is governed by the principles of Fundamental Rights. When you encroach on this, it is highly objectionable.

(1645/UB/RV)

Sir, I have another point to make about divorce. Divorces are taking place in different communities, not only among Muslims. It may not be in the mode of *Single Talaq* or *Triple Talaq*, but divorce is a reality in India. Why is the Government not taking that into notice? Why are they not educating the women who have become victims of divorce? They are silent on that. Why are they not showing compassion in such other cases? Why are they not going for the rescue of these ill-fated women? Why are they not arguing for criminal prosecution of the husbands in such other cases? Sir, with one shot, they are killing two birds. The 1986 legislation also nullified the decision in the Shah Bano case. These kinds of actions are highly objectionable.

Sir, my friend, Mr. Owaisi was talking about mob lynching. The people sitting on the Treasury Benches are saying many things about the ill-fated women. In 2018, in just one year, 27 persons were killed. Incidents of mob lynching have increased four to five folds in that year. Even the hon. Supreme Court has directed the Government to make an enactment to stop mob lynching and such other cases. The Government has not made any legislation. They have not done anything for that. What relief have they given? What kind of argument they have made on such cases? We all know that those people are also suffering; they are also having a lot of difficulties.

I request the hon. Members sitting on the other side, instead of making this kind of appeal, to do something for them. What are they doing for them? Here, it shows that they are maintaining double standard. If people are suffering, they have to argue for them. Their intention is to blackmail a particular community. They are not going to win it. They have targeted the Muslim community, that is their intention. They are not going to win in this kind of wicked things. I would like to tell you that the Government has an intention to keep the Muslims in fear complex. We are not going to fear these kinds of actions. We will fight and defeat such kind of actions.

(ends)

1647 hours

SHRI P. RAVEENDRANATH KUMAR (THENI): Sir, I would like to remined you that in Vedic period, women in our country were treated with good respect and honour. In general, they had obtained significant positions in various fields and in some cases, they were the decision-making authority. They also had opportunity like men had to develop themselves; they were completely free to choose their own path of life and select a life partner.

Sir, if you go to our medieval history, we can understand that women's status in the society had been deteriorated in the Middle Ages because of various bad practices against women in the society.

Sir, on this note, I would say that this Bill is the commitment of this Government under the leadership of hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi ji to give equal power to women in our society and give them opportunity to reach the highest position in social arena.

Sir, I would like to quote article 14 and article 15, "There shall be no discrimination against any citizen on grounds of religion, race, caste, sex or place of birth". This Bill will be another significant step to strengthen the related article in our Constitution. Sir, this is not a matter of majority or minority. It is a matter of humanity. It is a matter of women's rights. Our colleagues in the Opposition were talking about the logic and stories.

Sir, some funny things happened in our country.

(1650/KMR/MY)

Sir, some people say that there is no God but when we go to the temple, we can see them standing in the queue to worship the God. Why should they have such double standards? They are just confusing the people. Sir, through you, I would like to ask them one question. Will they agree if the same Muslim law is adopted for Hindus also? Sir, this Bill will endeavour to provide equal rights to all women in India irrespective of their religion.

Some of my colleagues were saying that there could be a law for men's empowerment also. I thank them for this. But right now, this Bill seeks to provide equal rights to all women irrespective of their religion. I, therefore, want to know whether they accept this piece of legislation or not.

Finally, I would say that given the right opportunities, women will achieve great successes and reach heights. Social practices like these should not be forced on them as they become impediments to their development. With these words, I support this Bill. Thank you. (ends)

**(Page 384-A)**

1652 hours

*SHRI M. SELVARAJ (NAGAPATTINAM): Hon. Chairman Sir, Vanakkam. The Muslim Women (Protection of Rights on Marriage) Bill 2019 has been brought for consideration. The Constitution of India framed by our Babasaheb Ambedkar provides equal rights and equality for the people of all religions. Babasaheb Ambedkar insisted for creation of a secular country. But this has become a question mark now. Myself and my party both think that this Bill is aimed to target and to make a negative impact on the Muslim minorities. I support the cause that the women should be given equal status. They should be treated with equality and the women should get equal rights on property. My party also supports this view. Here equality is considered to be unilateral. BJP talks about Common Civil Code. Why is that BJP not bringing Common Marriage Law. I want to ask that why is it so that BJP is not ready to bring a legislation for protection of all women irrespective of religion. Hon. Supreme Court in its verdict accorded permission to women to visit Sabarimala temple. But BJP which was in power at that time did not try to implement this verdict of Hon. Supreme Court. This BJP government talks high about women and their protection. I want to ask the Government why is it not ready to implement providing women the access to Sabarimala temple? The marriage laws should be common. After putting a ban on the triple talaq you will punish the male member of that family. If that is so who will support the affected family? How will they be protected? How will you provide allowance? These are the several questions which I want to ask while opposing this Bill. The Government is not worried about other Marriage laws. Large number of Hindu divorce cases are pending in the Hon. Courts. The Government is not concerned about Hindu Marriage Laws. I want to ask the government that why it is not showing any concern about these laws? Inter-caste marriages take place particularly in Tamil Nadu. But those who get into inter-caste marriages are killed. The Government is not concerned about bringing a legislation to prevent these honour killings. I want to stress that a special law should be legislated to check this menace.

* Original in Tamil

**(Page 384-B)**

HON CHAIRMAN: Mr. Selvaraj, please conclude.

SHRI M. SELVARAJ (NAGAPPATTINAM): Sir. Just give a minute. At the time of our country's independence, and when Pakistan was separated, the national leaders instilled confidence among the minorities ensuring that their lives will be protected. That is the reason why Muslims live with confidence in this country. I want to say that in order to instil such a confidence in their minds, laws like these should not be brought or implemented. I oppose this Bill. Thank you for this opportunity.

(ends)

(1655/SNT/CP)

1656 hours (Hon. Speaker *in the Chair*)

1656 hours

SHRI HASNAIN MASOODI (ANANTNAG): Hon. Speaker, Sir, I rise to oppose the Muslim Women (Protection of Rights on Marriage) Bill, 2019.

When the Bill was being introduced, its introduction was opposed on the ground that it offends the Constitution. The hon. Minister, in his introductory remarks, said that this House and the Parliament are supreme, sovereign and competent to make laws, and if the laws face some constitutional issue, that has to be dealt with by the court. I am of the view that it may not be a correct statement. This House is under a constitutional duty to enact a law that is in consonance with the mandate and spirit of the Constitution. This Bill, being an example of class legislation, offends the fundamental principles and ethos of the Constitution.

Hon. Speaker, Sir, it is painful that veiled attempts are being made to attribute insensitivity towards the imperatives of gender justice against the legal system, against the religion that, fourteen and a half centuries back, for the first time, recognised the right of women to hold property, to dispose of property and to enjoy property, that declared marriage a civil contract and gave women a right to pull out of the contract in certain circumstances. Moreover, the Supreme Court has held that Sharia law does not recognise instantaneous and irrevocable divorce.

Sir, why do I stand to oppose the Bill? It is because the Supreme Court has already held triple talaq to be void and illegal and there is no occasion to go in for a law. It is law of the land under article 141 and the need to have a separate law and enactment does not arise.

Secondly, the justification given for this Bill is that, it is dictated by the Supreme Court; it has to follow the diktat of the Supreme Court. The Supreme Court did not direct the Government to make triple talaq a crime and a penal consequence for the triple talaq. So, it will not be right to say that this law is being made to follow the Supreme Court judgement.